3

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ‘वीणा’ संक्षिप्त परिचय

रवींद्र कुमार*
सुरक्षा**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यपुस्तकें स्थानीय पाठ्य-सामग्री, प्रसंग एवं संदर्भों को ध्यान में रखकर निर्मित की जा रही हैं। प्रस्तुत लेख में हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ‘वीणा’ का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। समस्त अध्यायों का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। लेख के माध्यम से पाठ्यपुस्तक के सभी अध्यायों में समाहित रुचिकर, जिज्ञासापूर्ण, तल्लीनता आदि से ओत-प्रोत गतिविधियों का परिचय कराया गया है। ‘वीणा’ में रुचिकर कविता, कहानी, तथ्यात्मक निबंध, पत्र, अद्यतन संवाद, एकांकी एवं मजेदार पहेलियों के आधार पर सीखने-सिखाने के लिए रोचक गतिविधियाँ उपलब्ध हैं। जिसके लिए शिक्षक स्थानीय खेलों, कला एवं संस्कृति पर आधारित नवोन्मेषी पद्धतियों का प्रयोग कर प्रभावी शिक्षण कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में चयनित स्थानीय चित्रों एवं प्रसंगों में स्थानीयता को प्रमुखता दी गई है। पाठ्यपुस्तक के सभी अध्यायों में भारतीय पौराणिक कथा-परंपरा से लेकर आधुनिक एवं तकनीकी रूप से विकसित हो रहे नए भारत की अद्भुत छटा को दिखाया गया है जो इस बात को सिद्ध करता है कि प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सभ्यता की वाहक है। पाठ्यपुस्तक स्थानीय खेल, खोज तथा प्रयोग द्वारा सीखने-सिखाने के नए-नए तरीकों के प्रयोग पर बल देती है। अध्यायों से जुड़ी महत्वपूर्ण ई-सामग्रियाँ जैसे— ऑडियो, वीडियो, संप्रत्यय मैप, प्रश्नोत्तरी आदि क्यूआर कोड के माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक तथा शिक्षा के अन्य हितधारक प्राप्त कर सकते हैं।

भारत सदैव से ही एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश रहा है, यही भाषायी विविधता भारत को विश्व के सभी देशों से अलग बनाती है। जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बाँधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए हिंदी ही वह भाषा है जो इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकती है। हिंदी एक सुव्यवस्थित, सुग्राह्य एवं सरल भाषा है, जो भारत के अधिकतर राज्यों में

**सह-आचार्य*, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016
***सहायक आचार्य*, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बोधगया, बिहार 824 231

बोली, समझी, पढ़ी एवं लिखी जाती है। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे हिंदी भारत की समसामयिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के अंतर्गत तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। विद्यार्थी जीवन में जितना महत्व भोजन, कपड़े, हवा तथा पानी का है, उससे कहीं अधिक महत्व शिक्षा का है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जिससे बच्चों में ज्ञान का प्रसार होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देने पर बल देती है, जिसमें बुनियादी स्तर, प्रारंभिक और मध्य स्तरों के बीच सेतु का कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालय शिक्षा के लिए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023 के अनुसार पाठ्यपुस्तकें, स्थानीय पाठ्य-सामग्री, प्रसंग एवं संदर्भों को ध्यान में रखकर निर्मित होनी चाहिए। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा नवनिर्मित हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें स्थानीय खेल, खोज तथा प्रयोग द्वारा सीखने-सिखाने के नए-नए तरीकों के प्रयोग पर न केवल बल दे रही है, बल्कि इससे जुड़ी पाठ्यसामग्री भी पुस्तकों के माध्यम से प्रदान कर रही है। यह बात सर्वविदित है कि बच्चे सर्वप्रथम जो सीखते हैं वे अपनी मातृभाषा के माध्यम से सीखते हैं। समय के साथ देश के लिए शिक्षा नीति पर विचार करते समय इन विचारधाराओं को ध्यान में रखा जाता है। समाज में नई-नई विचारधाराएँ एवं मान्यताएँ आकार लेती हैं। नवीन विचारधाराएँ एवं मान्यताएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति से गुजरकर क्रमशः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में शामिल होती हैं। इन्हीं पाठ्यपुस्तकों को पढ़कर बच्चे एवं युवा अद्यतन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर समाज को एक नई दिशा प्रदान करते हैं। निश्चित रूप से यह कहना गलत नहीं होगा कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकें भारत के सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

पाठ्यपुस्तक की शिक्षणशास्त्रीय व्यवस्था

प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा नवनिर्मित कक्षा 3 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'वीणा-1' की पाठ्य-सामग्री का परिचय दिया गया है। रोचक कहानियाँ एवं कविताएँ पढ़कर बच्चे साहित्यगत भाषा के सहारे ही अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बाल साहित्य के द्वारा ही बच्चों में अपने देश की सभ्यता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को समझने की ललक पैदा होती है (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023)। बालमन की रुचियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के अठारह अध्यायों को पाँच महत्वपूर्ण इकाईयों में व्यवस्थित किया गया है। पाठ्यपुस्तक में रुचिकर कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, एकांकी, पहेली आदि को

शामिल किया गया है। प्रत्येक अध्याय में एक 'बार कोड' दिया गया है जो अध्याय से जुड़ें ई-संसाधनों तक पहुँचने का मार्ग बताता है, जैसे— वीडियो, ऑडियो, संप्रत्यय मैप, क्विज, प्रश्नोत्तर इत्यादि।

इस पाठ्यपुस्तक में भाषायी कौशलों, जैसे— समझ के साथ बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है। पाठ्यपुस्तक की प्रथम इकाई का शीर्षक 'हमारा पर्यावरण' है जिसमें शामिल 'सीखो','बया हमारी चिड़िया रानी' कविताएँ और 'आम का पेड़' कहानी प्रकृति की छटाओं को निहारने और अपने जीवन में उसे अंगीकार करने की भावना प्रस्तुत करती है। कविता 'चींटी' और संवाद 'कितने पैर' जीवन जगत का रुचिपूर्ण संसार प्रस्तुत करते हैं। 'मेहनत ही पूजा है प्रभु की, हमको यही सिखाती चींटी' ('वीणा', पृ. 9)। कविता की ये पंक्तियाँ बच्चों को कर्म पूर्ण शिक्षा की ओर अग्रसर करती हैं। इस कविता को पढ़कर बच्चे यह सीखेंगे कि किस प्रकार से एक छोटा-सा जीव प्रयासों से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है।

पुस्तक की दूसरी इकाई का नाम 'हमारे मित्र' है। मित्रता के भाव को व्यक्त करने के लिए मानवीय जीवन, पशु-पक्षी एवं प्रकृति पर आधारित पाठों को शामिल किया गया है। यह इकाई मनुष्य और उसके परिवेश के पारस्परिक संबंधों के आस-पास बुनी गई है। इस भाव को प्रस्तुत करने के लिए इसमें क्रमशः 'बीरबल की खिचड़ी', 'मित्र को पत्र', 'चतुर गीदड़' और 'प्रकृति पर्व-फूलदेई' जैसे पाठ सम्मिलित किए गए हैं। ये सभी रचनाएँ भाषायी कौशलों के साथ-साथ परिवेशीय सजगता का भाव भी पैदा करती हैं। पाठ्यसामग्री के चयन में विविधता और रोचकता को केंद्र में रखा गया है। एक ओर विधाओं की विविधता देखने को मिलेगी तो दूसरी ओर जीवन से जुड़े सभी आयामों की उपस्थिति भी मौजूद है। 'बीरबल की खिचड़ी' कहानी कहने की शैली का परिचय देती है और बच्चों को प्रोत्साहित करती है कि वे भी आस-पास देखी गई घटनाओं को कहानी के रूप में कहने का कौशल विकसित करें। इस कहानी के द्वारा बच्चों को देशज एवं विदेशी शब्द संपदा से परिचित कराया गया है। 'मित्र को पत्र' में ब्रह्मपुत्र नदी, माजुली द्वीप, सत्रिया नृत्य एवं कामाख्या मंदिर का उल्लेख किया गया है। इस पाठ के माध्यम से बच्चों

को अपनी बात पत्र के रूप में लिखकर अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। देखी गई बातों को, अनुभवों को कैसे लेखनीबद्ध किया जाए, अपनी कल्पनाओं को कैसे संप्रेषित किया जाए, ये समझ इस पाठ के माध्यम से बनेगी। इसके साथ-साथ यह पाठ बच्चों को भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की विशेषताओं से भी परिचित करवाता है। एकांकी 'चतुर गीदड़' के माध्यम से मगरमच्छ की बेवकूफी और गीदड़ की चतुराई से विपरीत परिस्थितियों से जूझने के साथ-साथ धीरज एवं साहस से कार्य करने की प्रेरणा दी गई है। 'प्रकृति पर्व-फूलदेई' में उत्तराखंड के एक त्योहार द्वारा बच्चों को प्रकृति प्रेम और सामाजिक सद्भाव की सीख दी गई है। यह पाठ भारतीय लोक गीतों, मान्यताओं और परंपराओं से जुड़ने का एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। तीसरी इकाई 'आओ खेलें' नाम से पुस्तक में प्रस्तुत है। खेल और मैदान का आनंद विद्यार्थियों के जीवन का अनिवार्य भाग होता है। इसे ध्यान में रखते हुए इस इकाई में 'रस्साकशी' और 'ट्रैफिक जाम' जैसी शिक्षण-अधिगम सामग्री सम्मिलित की गई हैं। इस इकाई में खेलों के माध्यम से शारीरिक विकास के साथ-साथ तार्किक चिंतन, नेतृत्व कौशलों के विकास की भरपूर संभावनाएँ हैं। इस इकाई का प्रमुख आकर्षण है— हमारे समाज के पारंपरिक खेल। वर्तमान समय में अनेक कारणों से बच्चे पारंपरिक खेलों का परिचय नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, यह इकाई बच्चों को भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति आकर्षित करती है। इकाई चार का शीर्षक 'अपना-अपना काम' है। इसमें बच्चों को श्रम के महत्व से परिचित करवाया गया है। श्रम के मूल्य को बच्चों हेतु ग्राह्य बनाने के लिए 'अपना-अपना काम' और 'किसान की होशियारी' जैसी कहानियाँ तथा 'पेड़ों की अम्मा तिमक्का' जैसा प्रेरक निबंध लिया गया है। इकाई पाँच का नाम 'हमारा देश' है। इसमें भारत देश की विविधता, उसका गौरवशाली इतिहास, कथा-परंपरा, खान-पान, संस्कृति और विविधता में एकता के तत्वों को प्रस्तुत किया गया है। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में प्राचीन परंपरा से चंद्रयान तक की यात्रा को सरल भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

पाठ्यपुस्तक में रोचक अधिगम अभ्यास

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास कार्य और गतिविधियों द्वारा बच्चों को अपनी बात प्रभावशाली तरीके से कहने के लिए अनेक अवसर दिए गए हैं। बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से इकाइयाँ और उनके अभ्यास नवीनता लिए हुए हैं। अभ्यासों को ऐसे व्यवस्थित किया गया है, जिससे बच्चे संप्रेषण के साथ सोचने-समझने, प्रश्न पूछने संबंधी गतिविधियों को स्वाध्याय से कर सकें। प्रत्येक पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें सभी बच्चों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। बच्चे अपनी बात अपनी भाषा में कह और लिख सकते हैं और अपना अनुभव साझा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'सीखो' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है, 'उगते हुए सूरज को देखकर आपके मन में किस प्रकार के भाव आते हैं?' इसके अतिरिक्त पुस्तक में दिए गए शीर्षकों, जैसे— 'सुनें कहानी',

‘मिलकर पढ़िए’, ‘आनंदमयी कविता’ और ‘पढ़ने के लिए’ के अंतर्गत पढ़ने की विविधतापूर्ण सामग्री का संयोजन किया गया है। मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने का अवसर प्रदान करना है।

अध्यायों के अभ्यास में बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य निर्माण की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हो। बच्चे सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। उदाहरण के लिए, ‘रस्साकशी’ कविता में यह प्रश्न दिया गया है, ‘आपका सबसे प्रिय खेल कौन-सा है? उसके बारे में चार पंक्तियाँ लिखिए।’ ‘बोलने से लिखित भाषा का विकास’ इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए इस तरह की अनेक गतिविधियाँ करवाई गई हैं। इसका ध्यान रखा गया है कि बच्चों की भाषा अधिगम सुगम और सरल हो।

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पनाशक्ति विशेष स्थान रखती है। बच्चे इस उम्र में पर्याप्त कल्पनाशील होते हैं। वे अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिससे विद्यार्थी कल्पना के संसार में प्रविष्ट हों। ऐसे प्रश्न बच्चों पर सही अथवा गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते। उदाहरण के लिए, ‘चंद्रयान’ पाठ में प्रश्न दिया गया है, ‘यदि चंद्रयान-3 से जुड़े वैज्ञानिक आपके विद्यालय में आएँ तो आप उनसे कौन-से प्रश्न पूछना चाहेंगे?’

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्ति में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए घर और आस-पड़ोस से जुड़ी गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, ‘आम का पेड़’ कहानी में घर के बड़ों से आम के विभिन्न प्रकार के नाम पूछने के लिए कहा गया है। रचनात्मकता मन की बात करने, रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में रचना और बच्चे के बीच संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु कुछ ऐसी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। अंत में देशभक्ति गीत ‘हिंद देश के निवासी’ बच्चों में देश प्रेम और गीत गाने की तथा रचने की प्रेरणा उजागर करता है।

शिक्षक के लिए कार्य

पाठ्यपुस्तक में रुचिकर कविता, कहानी, तथ्यात्मक निबंध, पत्र, अद्यतन संवाद, एकांकी एवं मजेदार पहेलियों के आधार पर सीखने-सिखाने के लिए भी रोचक गतिविधियाँ मौजूद हैं। इनके प्रभावी शिक्षण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा पाठ की प्रकृति के अनुसार कविता, कहानी, संवादों एवं अन्य विधाओं को स्वयं अथवा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। पाठ के रोचक अभ्यासों में मुख्यतः चित्र-शब्द मिलान, चित्राधारित कहानी बनाना, तुकबंदियाँ करना, नए शब्दों का प्रयोग एवं मुक्त रूप से प्रश्नों के प्रति अभिव्यक्ति व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया गया है। पाठ को पढ़ाने के दौरान शिक्षक का मुख्य उद्देश्य कक्षागत गतिविधियों का आयोजन करना होना चाहिए, जिनके

माध्यम से बच्चों को सक्रिय भागीदारी के साथ-साथ समूह या व्यक्तिगत रूप से शब्दों का चित्रों से मिलान करना, दिए गए चित्र पर अभिव्यक्ति करना, बातचीत के माध्यम से पहेलियों को हल करना और शब्दों की तुकबंदियों एवं शब्द प्रयोग से पाठ के मूल भाव को समझना, सिखाया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक से लिए गए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों के आयोजन में शिक्षक को एक मार्गदर्शक के रूप में समय-समय पर बच्चों का निर्देशन करते हुए स्वयं भी भागीदारी का अवसर खोजना चाहिए। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक का एक पाठ 'आम का पेड़' जिसमें एक अभ्यास है—'सौरभ और प्रिया की बगीचे की सैर' जिसमें सौरभ और प्रिया मिलकर बगीचे की सैर करते हैं और पता लगाते हैं कि बगीचे में क्या-क्या है। इस गतिविधि को करने के लिए शिक्षक बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करके बगीचा भ्रमण के दौरान शिक्षण कार्य कर सकते हैं। बच्चे बगीचे में जो भी देखेंगे, उसे वह अपनी अभ्यास पुस्तिका पर लिखेंगे और शिक्षक की उपस्थिति में वहीं पर बैठकर सामूहिक चर्चा भी करेंगे। इसी तरह पाठ्यपुस्तक में एक अभ्यास है, जिसमें तीन टोकरियाँ बनाई गई हैं, क्रमशः फल की टोकरी, अनाज की टोकरी एवं सब्जी की टोकरी। अब शिक्षक यहाँ यह गतिविधि कर सकते

कविता की बात

1. किससे क्या सीखें, मिलान कीजिए—

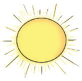

- हँसना
- जीवन में सदैव आगे बढ़ना
- जगना और जगाना
- अँधेरा दूर करना
- गीत गाना
- शीश झुकाना

सिमरन और मधुमक्खी की बात को आगे बढ़ाइए—

बातचीत के लिए

1. आपको इस चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

2. इनमें से कौन-कौन सी वस्तुएँ आप प्रतिदिन देखते हैं?
3. उगते हुए सूरज को देखकर आपके मन में किस प्रकार के भाव आते हैं?
4. रंग-बिरंगे फूलों को देखकर आपको कैसा लगता है?

हैं कि कागज की कुछ पर्चियाँ बनाई जाएँ। उन पर फल, अनाज तथा सब्जियों के नाम लिखे जाएँ और बच्चे पहचान कर क्रमशः फल अनाज एवं सब्जी की टोकरी में संबंधित पर्ची को डालें। इस तरह पाठ को रोचक ढंग से पढ़ाया जा सकता है। 'रस्साकशी' में एक अभ्यास है, जिसका शीर्षक है 'कविता से आगे' इस अभ्यास में घर के भीतर (इनडोर) और घर से बाहर (आउटडोर) खेलों के नाम पहचान कर उन्हें बताने के लिए कहा गया है। यहाँ श्यामपट्ट पर चित्र बनाकर या प्रोजेक्टर के माध्यम से चित्र दिखाकर अथवा मॉडल दिखाकर क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, लूडो, कैरम बोर्ड, शतरंज इत्यादि के बारे में बच्चों से बातचीत करके खेलों को इनडोर एवं आउटडोर खेलों की श्रेणी में श्रेणीबद्ध करने की गतिविधि आयोजित की जा सकती है। शिक्षक शब्दों के खेल से और पहेली के माध्यम से भी अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक में शामिल एक पहेली, जैसे— लालटेन ले पंखों में, उड़े अंधेरी रात में। जलती बाती बिना तेल के, ठंड और बरसात में। इस पहेली का जवाब है— 'जुगनू', जिसको सभी बच्चों ने नहीं तो कुछ ने तो रात में जरूर देखा होगा। इस प्रकार पुस्तक के अध्यायों को शिक्षक द्वारा स्थानीय खेलों, कला एवं संस्कृति पर आधारित नवोन्मेषी गतिविधियों का आयोजन कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

भाव अभिव्यक्ति के लिए भाषा वह वरदान है, जिसमें देखने-सुनने, हाव-भाव और बोलने जैसे भाषायी कौशलों का सार्थक प्रयोग किया जाता है। भाषा व्यक्तित्व के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। व्यक्ति अपने आंतरिक भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है तथा इसी अभिव्यक्ति के साथ अंतर्निहित अनंत शक्ति अभिव्यक्त होती है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में रुचिकर कविता, कहानी, तथ्यात्मक निबंध, पत्र, अद्यतन संवाद, एकांकी एवं मजेदार पहेलियों के आधार पर सीखने-सिखाने के अवसर प्रदान किए गए हैं, जिसके लिए शिक्षक स्थानीय खेलों, कला एवं संस्कृति पर आधारित नवोन्मेषी पद्धतियों का प्रयोग कर प्रभावी शिक्षण कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक स्थानीय खेल, खोज तथा प्रयोग द्वारा सीखने-सिखाने के नए-नए तरीकों के प्रयोग पर न केवल बल दे रही है, बल्कि अध्यायों से जुड़ी महत्वपूर्ण ई-सामग्रियाँ, जैसे— ऑडियो, वीडियो, संप्रत्यय मैप, क्विज, प्रश्नोत्तरी आदि क्यूआर कोड के माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक तथा शिक्षा के अन्य हितधारकों को प्राप्त हो रही हैं। इस प्रकार यह पाठ्यपुस्तक '*वीणा*-1' कक्षा तीन के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए एक पूर्ण सामग्री है। भारत की यह सभ्यता रही है कि यहाँ प्रत्येक पर्व सभी समुदायों एवं धर्मों के लोग मिल जुलकर मनाने में विश्वास करते हैं। 'प्रकृति पर्व-फूलदेई' में इस परंपरा की छवि को बहुत ही सुंदरता के साथ उभारा गया है। इसके अतिरिक्त अध्यायों के लिए चयनित स्थानीय चित्रों एवं गतिविधियों में भारतीयता एवं स्थानीय संस्कृति झलकती हुई प्रतीत होती है। पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के माध्यम से भारतीय पौराणिक कथा-परंपरा से लेकर आधुनिक एवं तकनीकी रूप से विकसित हो रहे नए भारत को दर्शाया गया है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2009. *भारतीय भाषाओं का शिक्षण— राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. *वीणा 1, कक्षा 3 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.